Murde Ke Sadme (Hindi)

मुर्दे के सदमे

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ص٤٠دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

मुर्दे के सदमे

येह रिसाला (**मुर्दे के सदमे**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : **मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

मुर्दे के सदमे[1]

शायद नफ़्स रुकावट डाले मगर आप येह रिसाला
(39 सफ़हात) पढ़ कर अपनी आख़िरत का भला कीजिये ।

फोड़े का ऑपरेशन

आफ़्ताबे शरीअ़तो त़रीक़त, शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان बहुत बड़े आ़लिमे उ़लूमे इस्लाम, आ़शिक़े शाहे अनाम, जां निसारे सह़ाबए किराम, मुह़िब्बे औलियाए किराम और आ़शिक़े दुरूदो सलाम थे । जब भी इ़ल्मी व तदरीसी अवक़ात से फ़ुरसत पाते ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल हो जाते । आप के जिस्मे अक़्दस पर **फोड़ा** हो गया था जिस का **ऑपरेशन** ना गुज़ीर था । डॉक्टर ने बेहोशी का इन्जेक्शन लगाना चाहा तो मन्अ़ फ़रमा दिया, **आप दुरूदो सलाम के विर्द में मश्ग़ूल हो गए, आ़लमे होशो ह़वास**

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (सिन्ध) यकुम मुह़र्रमुल ह़राम 1425 सि.हि. बरोज़ इतवार (20,21,22 फ़रवरी 2004 ई. सह़राए मदीना बाबुल मदीना कराची) में फ़रमाया था । तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है । **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

में दो तीन घन्टे तक ऑपरेशन होता रहा, दुरूद शरीफ़ की ब-र-कत से किसी क़िस्म की तक्लीफ़ का आप ने इज़्हार न होने दिया !

(तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या र-ज़विय्या, स. 485)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्र पर मिट्टी डालने वाले की मग़्फ़िरत हो गई

एक शख़्स को इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? जवाब दिया : मेरे आ'माल तोले गए, गुनाहों का वज़्न बढ़ गया, फिर एक थेली मेरी नेकियों के पलड़े में डाली गई जिस से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरी नेकियों का पलड़ा भारी हो गया और मेरी बख़्शिश हो गई। जब उस थेली को खोला गया तो उस में वोह मिट्टी थी जो मैं ने एक मुसल्मान की तदफ़ीन के वक़्त उस की **क़ब्र** पर डाली थी।

(مِرقاةُ الْمَفاتِيح ج٤ ص ١٨٩)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किसी ने सच कहा है :

رَحْمتِ حق "بہا" نہ مے جُوید

رَحْمتِ حق "بہانہ" مے جُوید

(या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत क़ीमत नहीं, बहाना तलाश करती है)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

क़ब्र पर मिट्टी डालने का त़रीक़ा

मुसल्मान की **क़ब्र** पर मिट्टी डालना मुस्तह़ब है, इस का त़रीक़ा भी मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये। **क़ब्र** के सिरहाने की त़रफ़ से दोनों हाथ से मिट्टी उठा उठा कर तीन मर्तबा डालिये, पहली बार डालते वक़्त कहिये : مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ[1] दूसरी बार : وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ[2] तीसरी बार कहिये : وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى[3] अब बाक़ी मिट्टी फावड़े वग़ैरा से डाल दी जाए।

क़ब्र की ह़ाज़िरी पर गिर्या व ज़ारी

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब किसी की **क़ब्र** पर तशरीफ़ लाते तो इस क़दर आंसू बहाते कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दाढ़ी मुबारक तर हो जाती। अ़र्ज़ की गई : "जन्नत व दोज़ख़ का तज़्किरा करते वक़्त आप नहीं रोते मगर **क़ब्र** पर बहुत रोते हैं इस की वज्ह क्या है ?" फ़रमाया : मैं ने नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है : **आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल क़ब्र है,** अगर **क़ब्र** वाले ने इस से नजात पाई तो बा'द का मुआ़-मला इस से आसान है और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआ़-मला ज़ियादा सख़्त है। **(ابن ماجه ج٤ ص٥٠٠ حديث ٤٢٦٧)**

مدینه

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : 1. हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया। 2. और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे। 3. और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे। (پ١٦، طٰهٰ:٥٥)

ख़ौफ़े उ़स्मानी

अल्लाह ! अल्लाह ! ज़ुन्नूरैन, जामिउ़ल कु़रआन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़ौफ़े ख़ुदाए रह़मान عَزَّ وَجَلَّ ! इन का लक़ब इस लिये **ज़ुन्नूरैन** था कि इन के निकाह़ में रह़मते कौनैन, साह़िबे क़ा–ब क़ौसैन, नानाए ह़–सनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की यके बा'द दीगरे दो शहज़ादियां थीं, इन्हें दुन्या ही में **क़त़ई जन्नती** होने की बिशारत मिल चुकी थी और इन से मा'सूम फ़िरिश्ते **ह़या** करते थे। इस के बा वुजूद **क़ब्र** की होलनाकियों और अन्धेरियों के बारे में बे इन्तिहा ख़ौफ़ज़दा रहा करते थे, **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّ وَجَلَّ के ग़–लबे के मौक़अ़ पर एक बार इर्शाद फ़रमाया : "**अगर** मुझे जन्नत व जहन्नम के दरमियान लाया जाए और येह मा'लूम न हो कि इन दोनों में से किस में जाऊंगा तो मैं वहीं **राख** हो जाना पसन्द करूं।" (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء ج ۱ ص ۹۹ حديث ۱۸۳ مُلَخَّصاً)

काश ! मेरी मां ही मुझे न जनती

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! हमारे दिलों पर गुनाहों की तहें जम चुकी हैं, ह़ालां कि यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम है कि मौत आ कर रहेगी, ऐ़न मुम्किन है आज ही आ जाए और हम **क़ब्र** में उतार दिये जाएं, येह भी जानते हैं कि रात को बिजली फे़ल हो जाए तो दिल घबराता और अंधेरा काट खाता है, इस के बा वुजूद **क़ब्र** के होलनाक अंधेरे का कोई एह़सास नहीं। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़त़ई जन्नती होने के बा वुजूद **ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी**

عَزَّوَجَلَّ से लरज़ां व तरसां रहा करते थे । एक बार ग़-ल-बए ख़ौफ़ के वक़्त आप ने तिनका हाथ में ले कर फ़रमाया : काश ! मैं येह तिनका होता, कभी कहा : काश ! मुझे पैदा ही न किया जाता, कभी कहते : **काश ! मेरी मां ही मुझे न जनती ।** (اِحْیَاءُ الْعُلُوم ج٤ص٢٢٦ مُلَخَّصاً)

काश के न दुन्या में पैदा मैं हुवा होता क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता

गुलशने मदीना का काश ! होता मैं सब्ज़ा या मैं बन के इक तिनका ही वहां पड़ा होता

आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है

काश के मेरी मां ने ही नहीं जना होता

दुन्यवी चीज़ों का सदमा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! हम सदमों से भरपूर मौत की तय्यारी से यक्सर ग़ाफ़िल हैं । याद रखिये ! हर वोह चीज़ जिस से ज़िन्दगी में आदमी को महज़ दुन्यवी मह़ब्बत होती है मरने के बा'द उस की याद तड़पाती है और येह **सदमा** मुर्दे के लिये ना क़ाबिले बरदाश्त होता है, इस बात को यूं समझने की कोशिश कीजिये कि जब किसी का फूल जैसा इक्लौता बच्चा गुम हो जाए तो वोह किस क़दर परेशान होता है और अगर साथ ही उस का कारोबार वग़ैरा भी तबाह हो जाए तो उस के सदमे का क्या आ़लम होगा ! नीज़ अगर वोह अफ़्सर भी हो और मुसीबत बालाए मुसीबत उस का वोह ओ़हदा भी जाता रहे तो उस पर जो कुछ सदमे के पहाड़ टूटेंगे इस को वोही समझेगा, लिहाज़ा उस को

वालिदैन, बीवी बच्चों, भाई बहनों, और दोस्तों का फ़िराक़ नीज़ गाड़ी, लिबास, मकान, दुकान, फ़ेक्टरी, उ़म्दा पलंग, फ़र्नीचर, खाने पीने की चीज़ों का ज़ख़ीरा, ख़ून पसीने की कमाई, ओ़हदा वग़ैरा **हर हर वोह चीज़ जिस से उसे मह़ज़ दुन्या के लिये मह़ब्बत थी उस की जुदाई का सदमा होता है** और जो जितना ज़ियादा लज़्ज़ते नफ़्स की ख़ातिर राह़तों में ज़िन्दगी गुज़ारता है मरने के बा'द उन आसाइशों के छूटने का सदमा भी उतना ही ज़ियादा होगा, जिस के पास मालो दौलत कम हो उस को उस के छूटने का ग़म भी कम और जिस के पास ज़ियादा हो उस को छूटने का ग़म भी ज़ियादा। याद रहे ! येह कम या ज़ियादा ग़म इसी सूरत में होगा जब कि उस ने उस मालो दौलत से दुन्यवी मह़ब्बत की होगी। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "येह इन्किशाफ़ जान निकलते ही तदफ़ीन से पहले हो जाता है और वोह फ़ानी दुन्या की जिन जिन ने'मतों पर **मुत़्मइन** था उन की जुदाई की आग उस के अन्दर शो'लाज़न होती है।"

(اِحْيَاءُ الْعُلُوْم ج٥ص٢٤٨)

मोमिन की क़ब्र 70 हाथ कुशादा की जाती है

जिस मुसल्मान ने सिर्फ़ ह़स्बे ज़रूरत दुन्या की चीज़ों पर इक्तिफ़ा किया वोह हलका फुलका होता है, मौत उस के लिये विसाले मह़बूब का पयाम लाती है, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे होते हैं, जिन्हों ने दुन्या के मालो अस्बाब से दिल नहीं लगाया होता उन्हें माल छूटने का

सदमा भी नहीं होता और **क़ब्र** में उन के ख़ूब मज़े होते हैं जैसा कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नूरबार है : ''मोमिन अपनी **क़ब्र** में एक सर सब्ज़ बाग़ में होता है और उस की क़ब्र **70** हाथ कुशादा की जाती है और उस की **क़ब्र** चौदहवीं के चांद की त़रह़ रोशन कर दी जाती है।'' **(مسند ابی یعلیٰ ج ٥ ص ٥٠٨ حدیث ٦٦١٣)**

क़ाबिले रश्क कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मुझे किसी पर इस क़दर रश्क नहीं आता जिस क़दर **क़ब्र** में जाने वाले उस मोमिन पर रश्क आता है जो दुन्या की मशक़्क़त से राह़त पा गया और अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहा। **(اِحْیَاءُ الْعُلُوْم ج ٥ ص ٢٤٩)**

क्या ह़ाल होगा !

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **नबिय्ये अकरम,** नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : **ऐ उ़मर !** जब आप का इन्तिक़ाल होगा तो क्या ह़ाल होगा ! आप की क़ौम आप को ले जाएगी और आप के लिये तीन गज़ लम्बी और डेढ़ गज़ चोड़ी **क़ब्र** तय्यार करेंगे, फिर वापस आ कर आप को ग़ुस्ल देंगे और कफ़न पहनाएंगे और फिर ख़ुश्बू लगा कर आप को उठाएंगे ह़त्ता कि आप को **क़ब्र** में रख देंगे फिर आप (की क़ब्र) पर मिट्टी बराबर कर देंगे और आप को दफ़न कर देंगे और जब वोह वापस लौटेंगे तो आप के पास इम्तिह़ान लेने वाले

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

दो फ़िरिश्ते **मुन्कर व नकीर** आएंगे, उन की आवाज़ बिजली की कड़क जैसी और उन की आंखें उचक्ने वाली बिजली की त़रह़ होंगी वोह अपने बालों को घसीटते हुए आएंगे और अपने दांतों से **क़ब्र** को खोद कर आप को झन्झोड़ देंगे। ऐ उ़मर ! उस वक़्त क्या कैफ़िय्यत होगी ? ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : क्या उस वक़्त मेरी **अ़क़्ल** आज की त़रह़ मेरे साथ होगी ? फ़रमाया : "हां।" अ़र्ज़ की : फिर اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं उन को काफ़ी होउंगा। **(اِتحافُ السّادَة للزّبيدى ج١٤ص٣٦٢)**

मय्यित की अ़क़्ल सलामत रहती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى येह ह़दीसे पाक नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : मौत की वज्ह से **अ़क़्ल** में कोई तब्दीली नहीं आती सिर्फ़ बदन और आ'ज़ा में तब्दीली आती है लिहाज़ा मुर्दा उसी त़रह़ अ़क़्ल मन्द, समझदार और तकालीफ़ व लज़्ज़ात को जानने वाला होता है, अ़क़्ल बात़िनी शै है और नज़र नहीं आती। इन्सान का जिस्म अगर्चे गल सड़ कर बिखर जाए फिर भी **अ़क़्ल सलामत रहती है।**

(اِحْيَاءُ الْعُلُوْم ج٥ص٢٥٨ ملخّصاً)

तश्वीश...... तश्वीश...... तश्वीश

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तश्वीश, तश्वीश और सख़्त तश्वीश ख़ौफ़, ख़ौफ़ और सख़्त तरीन ख़ौफ़ का मुआ़-मला है, जानवर की तो मरते ही क़ुव्वते मह़सूसा ख़त्म हो जाती है

मगर इन्सान की अ़क़्ल और मह़सूस करने की त़ाक़त जूं की तूं बाक़ी रहती बल्कि देखने और सुनने की क़ुव्वत कई गुना बढ़ जाती है। हाए ! हाए ! अगर हमारी बद आ'मालियों के सबब **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** हम से नाराज़ हो गया तो हमारा क्या बनेगा ! **ज़रा सोचो तो सही ! अगर हमें ख़ूब सूरत और आसाइशों से भरपूर कोठी में तन्हा क़ैद कर दिया जाए तब भी घबरा जाएं !** और हम में से शायद कोई भी क़ब्रिस्तान में तो अकेला एक रात गुज़ारने की जिसारत न कर सके ! आह ! उस वक़्त क्या होगा जब मनों मिट्टी तले हमें अकेला छोड़ कर हमारे अह़बाब पलट जाएंगे, जिस्म अगर्चे साकिन होगा मगर अ़क़्ल सलामत होगी, लोगों को जाता देख रहे होंगे, उन के क़दमों की चाप सुन रहे होंगे, मनों मिट्टी तले दबे पड़े होंगे, आह ! आह ! आह ! बे नमाज़ियों, माहे र-मज़ान के रोज़े बिला उ़ज़्रे शर-ई न रखने वालों, ज़कात देने से कतराने वालों, फ़िल्में डिरामे देखने वालों, गाने बाजे सुनने वालों, मां बाप को सताने वालों, मुसल्मानों की बिला इजाज़ते शर-ई दिल आज़ारियां करने वालों, चोरियां डकेतियां करने वालों, लोगों को धमकी आमेज़ चिठ्ठियां भेज कर रक़मों का मुत़ा-लबा करने वालों, जेब कतरों, लोगों की ज़मीनें दबा लेने वालों, बेबस हारियों का ख़ून चूसने वालों, इक़्तिदार के नशे में बद मस्त हो कर ज़ुल्मो सितम की आंधियां चलाने वालों, अपनी सिह़्ह़त व दौलत के नशे में बद मस्त हो कर गुनाहों का बाज़ार गर्म करने वालों को हो सकता है इस ज़ाहिरी ज़िन्दगी में कोई क़ब्र में बन्द न कर सके

ताहम अ़न्क़रीब या'नी चन्द साल, चन्द माह, चन्द दिन बल्कि ऐन मुम्किन है चन्द घन्टों के बा'द मौत आ संभाले और इन को क़ब्र में अकेला बन्द कर दिया जाए ! ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र आ़बिद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी मां से कहते हैं **:** "प्यारी मां ! क्या ही अच्छा होता कि आप मेरे ह़क़ में बांझ (या'नी बे औलाद) होतीं। आह ! अब तो मैं पैदा हो ही गया हूं तो सुन लीजिये कि आप के बेटे को त़वील अ़र्से क़ब्र में बन्द रहना पड़ेगा और फिर वहां से निकलने के बा'द मैदाने मह़शर की त़रफ़ कूच करना होगा।" **(اِحْیَاءُ الْعُلُوْم ج۵ص۲۳۸)**

गुनाह से बचने का एक नुस्ख़ा

हाए ! हाए ! मरने के बा'द कैसी बे कसी होगी ! किस क़दर बे बसी होगी ! मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप अपनी इस्लाह़ चाहते हैं तो गुनाह करने को जब जी चाहे उस वक़्त येह नुस्ख़ा इस्ति'माल कीजिये या'नी येह सोचने की आ़दत डालिये कि **यक़ीनी मौत जो कि आज भी आ सकती है और मरने के बा'द मुझे घुप अंधेरी और मुख़्तसर सी क़ब्र में उतार कर बन्द कर दिया जाएगा, मैं अगर्चे ब ज़ाहिर हिल भी नहीं सकूंगा मगर सब कुछ समझ में आ रहा होगा !** हाए ! उस वक़्त मुझ पर क्या गुज़र रही होगी ! मेरे बच्चों और जिगरी दोस्तों को येह मा'लूम होने के बा वुजूद कि मुझे सब कुछ नज़र आ रहा है फिर भी अकेला छोड़ कर सारे ही मुझे पीठ दे कर चल पड़ेंगे, हाए ! हाए ! मेरी ना फ़रमानियां ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हो गया तो मेरा

क्या बनेगा ! ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ **शर्हुस्सुदूर** में नक़्ल करते हैं :

क़ब्र की डांट

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब मुर्दे के साथ आने वाले लौट कर चलते हैं तो मुर्दा बैठ कर उन के क़दमों की आवाज़ सुनता है और क़ब्र से पहले कोई उस के साथ हम-कलाम नहीं होता, **क़ब्र कहती है** कि : ऐ आदमी ! क्या तूने मेरे ह़ालात न सुने थे ? क्या मेरी तंगी, बदबू, होलनाकी और कीड़ों से तुझे नहीं डराया गया था ? अगर ऐसा था तो फिर तूने क्या तय्यारी की ? **(شَرْحُ الصُّدُوْر ص ١١٤)**

भाग नहीं सकते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सोचिये तो सही उस वक़्त जब कि **क़ब्र** में तन्हा रह गए होंगे, घबराहट त़ारी होगी, न कहीं जा सकते होंगे न किसी को बुला सकते होंगे और भाग निकलने की भी कोई सूरत न होगी। उस वक़्त **क़ब्र** की कलेजा फाड़ पुकार सुन कर क्या गुज़रेगी ! **क़ब्र** में नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल करने वालों के लिये राह़तें जब कि बे नमाज़ियों, और ग़ैर शर-ई फ़ेशन करने वालों के लिये आफ़तें ही आफ़तें होंगी, चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

फ़रमां बरदार पर रह़मत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, **क़ब्र** मुर्दे से कहती है कि : अगर तू अपनी ज़िन्दगी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार था तो आज मैं तुझ पर रह़मत करूंगी और अगर तू अपनी ज़िन्दगी में **अल्लाह** तआ़ला का ना फ़रमान था तो मैं तेरे लिये अ़ज़ाब हूं, मैं वोह घर हूं कि जो मुझ में नेक और इत़ाअ़त गुज़ार हो कर दाख़िल हुवा वोह मुझ से ख़ुश हो कर निकलेगा और जो ना फ़रमान व गुनहगार था, वोह मुझ से तबाह ह़ाल हो कर निकलेगा ।

(شَرْحُ الصُّدُور ص ١١٤، اهوال القبور لابن رجب ص٢٧)

सब से होलनाक मन्ज़र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **क़ब्र** का अन्दरूनी मुआ़-मला इन्तिहाई तश्वीश नाक है, कोई नहीं जानता कि मेरे साथ क्या होगा ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **क़ब्र का मन्ज़र सब मनाज़िर से ज़ियादा होलनाक है ।**

(تِرمذی ج ٤ ص ١٣٨ حدیث ٢٣١٥)

मह़बूबे बारी की अश्कबारी

हमारे बख़्शे बख़्शाए आक़ा, हमें बख़्शवाने वाले मीठे मीठे मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा, शाफ़ेए़ यौमे जज़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **क़ब्र** के तअ़ल्लुक़ से ख़ौफ़े ख़ुदा मुला-ह़ज़ा हो । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना

बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, हम सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह एक **जनाज़े** में शरीक थे तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **क़ब्र** के कनारे पर बैठे और **इतना रोए कि मिट्टी भीग गई ।** फिर फ़रमाया : "इस के लिये तय्यारी करो ।"

(ابن ماجه ج ٤ ص ٤٦٦ حديث ٤١٩٥)

क़ब्र का पेट

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन सालेह़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब क़ब्रिस्तान से गुज़रते तो फ़रमाते : ऐ क़ब्रों ! तुम्हारा ज़ाहिर तो बहुत अच्छा है लेकिन मुसीबत तुम्हारे पेट में है। **(اِحیاءُ الْعُلُوم ج ٥ ص ٢٣٨)**

हाए मौत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा सु-लमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की आ़दते करीमा थी कि जब रात होती तो क़ब्रिस्तान की त़रफ़ निकल जाते और फ़रमाते : ऐ अहले कुबूर ! तुम मर गए **हाए मौत !** तुम ने अपने अ़मल देखे हाए रे अ़मल ! फिर फ़रमाते : हाए ! हाए ! कल "अ़त़ा" भी **क़ब्र** में होगा, हाए ! कल अ़त़ा भी **क़ब्र** में होगा । इसी त़रह़ रोते धोते सारी रात गुज़ार देते । **(ایضاً)**

अंधेरी क़ब्र का दिल से नहीं निकलता डर
करूंगा क्या जो तू नाराज़ हो गया या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

दफ़्नाने वालों को मुर्दा देखता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये ! गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार कर मरने वाले के लिये किस क़दर दर्दनाक मुआ़-मला होगा और जब **क़ब्र** में वोह सब कुछ देख, सुन और समझ रहा होगा उस वक़्त उस पर क्या गुज़र रही होगी ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **मुर्दे** को इस बात की पहचान होती है कि उसे कौन ग़ुस्ल दे रहा है और कौन उस को उठा रहा है नीज़ उसे क़ब्र में कौन उतारता है।

(مُسْنَد اِمام اَحمَد بن حنبل ج٤ ص٨ حديث ١٠٩٩٧)

बे कसी का दिन

आह ! आह ! आह ! जब **क़ब्र** में उतारा जा रहा होगा उस वक़्त क्या बीत रही होगी ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें अपनी **बे कसी का दिन** न बताऊं ? येह वोह दिन है जब मुझे **क़ब्र** में तन्हा उतार दिया जाएगा। **(اِحْیاءُ الْعُلُوم ج٥ ص٢٣٧)**

गो पेशे नज़र क़ब्र का पुरहौल गढ़ा है अफ़्सोस मगर फिर भी येह ग़फ़्लत नहीं जाती

पड़ोसी मुर्दों की पुकार

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی नक़्ल फ़रमाते हैं : जब (गुनाहगार) मुर्दे को **क़ब्र** में रख देते हैं और उस पर अ़ज़ाब का सिल्सिला शुरूअ़ हो जाता है तो उस के पड़ोसी मुर्दे उस से कहते हैं : ''ऐ अपने पड़ोसियों और

भाइयों के बा'द दुन्या में रहने वाले ! क्या तेरे लिये हमारे मुआ़-मले में कोई इ़ब्रत न थी ? क्या हमारे तुझ से पहले (दुन्या से) चले जाने में तेरे लिये ग़ौरो फ़िक्र का कोई मक़ाम न था ? क्या तूने हमारे सिल्सिलए आ'माल का ख़त्म होना न देखा ? तुझे तो मोहलत थी तूने वोह नेकियां क्यूं न कर लीं जो तेरे भाई न कर सके।" ज़मीन का गोशा उसे पुकार कर कहता है : "ऐ दुन्याए ज़ाहिर से धोका खाने वाले ! तुझे उन से इ़ब्रत क्यूं न हुई जो तुझ से पहले यहां आ चुके थे और उन्हें भी दुन्या ने धोके में डाल रखा था।" **(اِحیاءُ الْعُلوم ج ۵ ص ۲۰۳)**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़क़ीक़त येह है कि हर मरने वाला मरते ही गोया येह पैग़ाम देता चला जाता है कि जिस त़रह़ मैं मर गया हूं आप को भी मरना पड़ जाएगा, जिस त़रह़ मुझे मनों मिट्टी तले दफ़्न किया जाने वाला है उसी त़रह़ तुम्हें भी दफ़्न किया जाएगा ।

जनाज़ा आगे बढ़ के कह रहा है ऐ जहां वालो !
मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं

मेरे बाल बच्चे कहां हैं !

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से रिवायत है : जब मय्यित को **क़ब्र** में रखा जाता है तो सब से पहले उस का **अ़मल** आ कर उस की बाईं रान को ह़-र-कत देता और कहता है : मैं तेरा **अ़मल** हूं । वोह मुर्दा पूछता है : **मेरे बाल बच्चे कहां हैं ?** मेरी ने'मतें, मेरी दौलतें कहां हैं ? तो **अ़मल** कहता है : येह सब तेरे पीछे रह गए और मेरे

सिवा तेरी **क़ब्र** में कोई नहीं आया। **(شَرْحُ الصُّدُور ص ١١١)**

साथ जिगरी यार भी न आएगा तू अकेला क़ब्र में रह जाएगा

माल, दुन्या का यहीं रह जाएगा हर अ़मल अच्छा बुरा साथ आएगा

माले दुन्या दो जहां में है वबाल

काम आएगा न पेशे ज़ुल जलाल

जन्नत का बाग़ या जहन्नम का गढ़ा !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ऊ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "**क़ब्र** या तो जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा।"

(ترمذی ج٤ ص٢٠٨ حدیث٢٤٦٨)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : जो शख़्स **क़ब्र** का ज़िक्र ज़ियादा करे वोह उसे जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ पाता है और जो उस की याद से ग़ाफ़िल होता है, वोह उसे जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा पाता है। **(اِحْیَاءُ الْعُلُوْم ج٥ ص٢٣٨)**

बे शुमार लोग मग़मूम हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي फ़रमाते हैं : मैं क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुवा, जब वहां से निकलने लगा तो बुलन्द आवाज़ से किसी ने कहा : **ऐ साबित !** इन क़ब्र वालों की ख़ामोशी से धोका न खाना इन में **बे शुमार लोग मग़मूम हैं।** **(اِحْیَاءُ الْعُلُوْم ج٥ ص٢٣٨)**

आ़रिज़ी क़ब्र

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَرِيْم ने अपने घर में एक **क़ब्र** खोद रखी थी। जब कभी अपने दिल में कुछ सख़्ती पाते तो उस के अन्दर लैट जाते और जितनी देर **अल्लाह तआ़ला** चाहता उस में ठहरे रहते। फिर पारह 18 **सू-रतुल मुअमिनून** की आयत 99 और 100 का येह ह़िस्सा बार बार तिलावत करते :

رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿۹۹﴾ لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब ! मुझे वापस फैर दीजिये शायद अब मैं भलाई कमाऊं उस में जो छोड़ आया हूं।

फिर अपने नफ़्स की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर फ़रमाते : **ऐ रबीअ़ !** अब तुझे वापस लौटा दिया गया है। (ایضاً)

अहले क़ुबूर की सोह़बत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ क़ब्रों के पास बैठे थे, इस सिल्सिले में उन से पूछा गया तो फ़रमाया : मैं ऐसे लोगों के पास बैठा हूं जो **आख़िरत** की याद दिलाते हैं और जब उठता हूं तो मेरी **ग़ीबत** नहीं करते। (اِحْیَاءُ الْعُلُوْم ج ۵ ص ۲۳۷)

मैं भी इन्हीं में से हूं

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد रात क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले जाते और फ़रमाते : **ऐ अहले क़ुबूर !** क्या बात है कि मैं पुकारता हूं लेकिन तुम जवाब नहीं देते ? फिर फ़रमाते : **अल्लाह**

عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! इन को जवाब देने में कोई रुकावट है, आह ! गोया मैं भी इन्हीं में से हूं। फिर तुलूए़ फ़ज्र तक नवाफ़िल पढ़ते रहते। (ایضاً)

कीड़े रींग रहे हैं

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक बार अपने किसी **रफ़ीक़** से फ़रमाया : **भाई !** मौत की याद ने मेरी नींद उड़ा दी, मैं रात भर जागता रहा और क़ब्र वाले के बारे में सोचता रहा, ऐ भाई ! अगर तुम तीन दिन बा'द **मुर्दे** को उस की क़ब्र में देखो तो एक त़वील अ़र्से तक ज़िन्दगी में उस के साथ रहे होने के बा वुजूद तुम्हें उस से वहूशत होने लगे और अगर तुम उस का घर या'नी उस की क़ब्र का अन्दरूनी हिस्सा देखो जिस में **कीड़े रींग रहे** और बदन को खा रहे हैं, पीप जारी, सख़्त बदबू आ रही है और कफ़न भी बोसीदा हो चुका है। **हाए ! हाए !** ग़ौर तो करो ! येही **मुर्दा** जिस वक़्त ज़िन्दा था तो ख़ूब सूरत था, ख़ुश्बू भी अच्छी इस्ति'माल किया करता था, लिबास भी उ़म्दा पहना करता था..... रावी कहते हैं : इतना कहने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई, एक चीख़ मारी और बेहोश हो गए। (اِحْیَاءُ الْعُلُوْم ج ۵ ص ۲۳۷ مُلَخَّصاً)

नर्म नर्म बिस्तर और क़ब्र

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ह़र्ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **ज़मीन** को उस शख़्स पर तअ़ज्जुब होता है जो अपनी ख़्वाब गाह को दुरुस्त करता और सोने के लिये नर्म नर्म बिस्तर बिछाता है। ज़मीन उस

से कहती है : **ऐ इब्ने आदम !** तू मेरे अन्दर त़वील अ़र्से तक अपने गलने सड़ने को क्यूं याद नहीं करता ? याद रख ! मेरे और तेरे दरमियान कोई चीज़ ह़ाइल नहीं होगी ! (या'नी तुझे ज़मीन पर बिग़ैर गदेले ही के रख दिया जाएगा !)

(اِحْیَاءُ الْعُلُوْم ج ۵ ص ۲۳۸)

बैल की त़रह़ चीख़ते

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मौत को कसरत से याद रखने वालों में से थे । जब क़ब्रों को देखते तो **क़ब्र** के अंधेरे और तन्हाई की वह़शत वग़ैरा के ख़ौफ़ से इस क़दर बे क़रार हो जाते कि **आप के मुंह से बैल की त़रह़ चीख़ों की आवाज़ निकलती ।**

(ایضاً ص ۲۳۷)

क़ब्र में डराने वाली चीज़ें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई **क़ब्र** का मुआ़-मला बे ख़ौफ़ होने वाला नहीं, आज हम पर **छिप-कली** चढ़ जाए, बल्कि **कन-खजूरा** क़रीब ही से गुज़र जाए तो शायद बदन पर कप-कपी त़ारी हो जाए और मुंह से चीख़ निकल जाए, हाए ! हाए ! गुनाहों की वज्ह से अगर ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم नाराज़ हो गए तो **क़ब्र** के तंग गढ़े में आ कर कौन बचाएगा, कौन तसल्ली देगा । आह ! आह ! आह ! ऐ बिल्ली की मियाउं सुन कर घबरा जाने वालो सुनो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی "शर्हुस्सुदूर" में नक़्ल फ़रमाते हैं : **"जब इन्सान क़ब्र में दाख़िल होता है तो वोह**

तमाम चीज़ें उस को डराने के लिये आ जाती हैं जिन से वोह दुन्या में डरता था और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से न डरता था।'' (شَرْحُ الصُّدُور ص۱۱۲)

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

गुनाहों की ख़ौफ़नाक शक्लें

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : अगर तुम नूरे बसीरत से अपने बात़िन को देखो तो वोह त़रह़ त़रह़ के **दरिन्दों** के घेरे में है, म-सलन ग़ुस्सा, शह्वत, कीना, ह़सद, तकब्बुर, ख़ुद पसन्दी और रियाकारी वग़ैरा। अगर तुम गुनाहों के नज़र न आने वाले इन **दरिन्दों** से लम्ह़ा भर के लिये भी ग़ाफ़िल हो कर गुनाह करते हो तो येह दरिन्दे तुम्हें काटते और नोचते हैं। अगर्चे फ़िलह़ाल तुम्हें इस की तक्लीफ़ मह़सूस नहीं होती और वोह तुम्हें नज़र भी नहीं आ रहे मगर मरने के बा'द क़ब्र में पर्दा उठ जाएगा और तुम इन दरिन्दों को देख लोगे। हां हां तुम अपनी आंखों से देखोगे कि गुनाहों ने **बिच्छूओं** और **सांपों** वग़ैरा की शक्लों में क़ब्र में तुम्हें घेर रखा है। यक़ीन मानो येह बुरी ख़स्लतें दर ह़क़ीक़त ख़ौफ़नाक दरिन्दे ही हैं जो इस वक़्त भी तुम्हारे पास मौजूद हैं लेकिन इन की **भयानक शक्लें** तुम्हें क़ब्र में नज़र आएंगी। इन दरिन्दों को अपनी मौत से पहले ही मार डालो या'नी गुनाह छोड़ दो, अगर नहीं छोड़ते तो अच्छी त़रह़ जान लो कि वोह गुनाहों के दरिन्दे इस वक़्त भी तुम्हारे दिल को काट और नोच रहे हैं। अगर्चे तुम्हें फ़िलह़ाल तक्लीफ़ मह़सूस नहीं होती। (اِحْيَاءُ الْعُلُوْم ج٤ ص٢٣٣ مُلَخَّصاً)

अगर ईमान बरबाद हो गया !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सख़्त ग़फ़्लत का दौर, सिर्फ़ दुन्यवी उ़लूमो फ़ुनून ही सीखने पर ज़ोर और ख़ूब दौलत कमाओ का हर त़रफ़ शोर है। इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने, नमाज़ें पढ़ने और सुन्नतों पर अ़मल करने के लिये मुसल्मान तय्यार नहीं, चेहरा, लिबास, बल्कि तहज़ीबो तमद्दुन सब में कुफ़्फ़ार की नक़्क़ाली का ज़ेह्न है। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हर वक़्त फ़ुज़ूल बक बक और गुनाहों की कसरत इन्तिहाई तबाह कुन है, ज़ियादा बोलते चले जाने से बसा अवक़ात ज़बान से **कुफ़्रिय्यात** भी निकल जाते हैं मगर बोलने वाले को इस का शुऊ़र तक नहीं होता, **ईमान की ह़िफ़ाज़त** का ज़ेह्न भी अब कम ही लोगों का रह गया है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न करे ना फ़रमानियों के बाइ़स अगर ईमान बरबाद हो गया और कुफ़्र पर ख़ातिमा हुवा तो **वल्लाह बिल्लाह तल्लाह** सख़्त बरबादी होगी। जो कुफ़्र पर मरेगा उस के अ़ज़ाबे क़ब्र की एक झलक मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रत इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नक़्ल करते हैं :

अन्धा बहरा चौपाया

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुन्कदिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मुझे येह ख़बर पहुंची है कि क़ब्र में काफ़िर पर **अन्धा और बहरा चौपाया** मुसल्लत़ किया जाता है। उस के हाथ में लोहे का एक **कोड़ा** होता है। वोह उस कोड़े से काफ़िर को क़ियामत तक मारता रहेगा।

(اِحیاءُ الْعُلُوم ج ٥ ص ٢٠٩ مُلَخَّصاً)

काश ! वोह शख़्स मैं होता

हर मुसल्मान को ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करनी चाहिये इस के लिये **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बनाइये ताकि आ़शिक़ाने रसूल की अच्छी सोह़बत मुयस्सर आए, इल्म ह़ासिल हो, ज़बान की एह़तियात़ का जज़्बा मिले और ईमान की क़द्रो मन्ज़िलत दिल में बढ़े और दुन्यवी मक़ासिद जैसे कि रोज़ी और नोकरी के बारे में दुआ़ओं के साथ साथ ख़ातिमा बिलख़ैर और मग़्फ़िरत की दुआ़एं करने और करवाने का भी ज़ेह्न बने। हमारे अस्लाफ़ को बुरे ख़ातिमे का बेह़द ख़ौफ़ हुवा करता था चुनान्चे **ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया **:** एक शख़्स जहन्नम से एक हज़ार साल बा'द निकाला जाएगा। (फिर फ़रमाया) **''काश ! वोह शख़्स मैं होता।''** आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह बात जहन्नम में हमेशा रहने और बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से फ़रमाई। **(اَیضاً ج ٤ ص ٢٣١)**

सहमे सहमे रहने वाले बुज़ुर्ग

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه चालीस साल तक नहीं हंसे। रावी कहते हैं **:** मैं जब उन को बैठा हुवा देखता तो यूं मा'लूम होता गोया एक **क़ैदी** हैं जिसे गरदन उड़ाने के लिये लाया गया हो ! और जब गुफ़्त-गू फ़रमाते तो अन्दाज़ येह होता गोया **आख़िरत** को आंखों से देख देख कर बता रहे हैं और जब ख़ामोश होते तो ऐसा महसूस होता गोया इन की आंखों के सामने **आग** भड़क रही है !

इस क़दर ग़मगीन व ख़ौफ़ज़दा रहने का जब सबब पूछा गया तो फ़रमाया : मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि अगर **अल्लाह तआ़ला** ने मेरे बा'ज़ ना पसन्दीदा आ'माल को देख कर मुझ पर ग़ज़ब किया और फ़रमाया कि जाओ मैं तुम्हें नहीं बख़्शता तो मेरा क्या बनेगा ? **(ایضاً)**

आह ! कस्रते इस्यां, हाए ! ख़ौफ़ दोज़ख़ का
काश ! इस जहां का मैं न बशर बना होता

रब عَزَّوَجَلَّ राज़ी हो गया !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों का द-रजा बहुत ऊंचा होता है चुनान्चे जिस रात ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन बसरी** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वफ़ात हुई, उस रात देखा गया कि गोया आस्मान के दरवाज़े खुले हैं और एक मुनादी ए'लान कर रहा है : सुनो ! **ह़सन बसरी** बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस ह़ाल में ह़ाज़िर हुए हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से राज़ी है। **(اِحیاءُ الْعُلُوم ج۵ص۲۶۶)**

अ़र्श पर धूमें मचें वोह मोमिने सालेह़ मिला
फ़र्श से मातम उठे वोह त़य्यिबो त़ाहिर गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

ख़ुश फ़हमी में मत रहिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो इस ख़ुश फ़हमी में होते हैं कि मेरा **अ़क़ीदा** बहुत मज़्बूत़ है, मैं ख़्वाह कुफ़्फ़ार और बद मज़्हबों से दोस्ती रखूं, चाहे बद अ़क़ीदा लोगों का बयान सुनूं, उन की किताबें और अख़्बार

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

में उन के मज़ामीन पढ़ूं ख़्वाह उन की सोह़बत में रहूं, मेरा ईमान कहीं नहीं जाता ! **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **की क़सम !** ऐसे लोग सख़्त ग़-लत़ी पर हैं। **''मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत''** में है कि **: जिस ने अपने नफ़्स पर ए'तिमाद किया उस ने बहुत बड़े कज़्ज़ाब पर ए'तिमाद किया और अगर नफ़्स कोई बात क़सम खा कर कहे तो सब से बड़ा झूटा येही है।** (माख़ूज़ अज़ मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 277) दिल के कानों से सुनिये ! कुफ़्फ़ार और बद मज़्हबों की नीज़ मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबा व औलिया رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم اَجْمَعِيْن के गुस्ताख़ों की दोस्ती और उन की सोह़बत में रहना, उन को उस्ताद बनाना, उन का बयान सुनना वग़ैरा सब ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं और अगर उन की नुहूसत से ईमान बरबाद हो गया तो **क़ब्र** में गूना गूं अ़ज़ाबात का सामना होगा म-सलन क़ियामत तक **निनानवे ख़ौफ़नाक अज़्दहे** डसेंगे और जहन्नम में हमेशा हमेशा के लिये रहना होगा। काफ़िर की सोह़बत के बाइस ईमान बरबाद कर बैठने वाला बद नसीब मुरतद बरोज़े क़ियामत ह़सरत से ख़ूब वावेला मचाएगा। चुनान्चे पारह **19, सू-रतुल फ़ुरक़ान** की आयत नम्बर **28** और **29** में इर्शाद होता है **:**

يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वाए ख़राबी मेरी ! हाए !! किसी त़रह़ मैं ने फ़ुलाने को दोस्त न बनाया होता। बेशक उस ने मुझे बहका दिया मेरे पास आई हुई नसीह़त से।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلی)

ईमान पर ख़ातिमे का विर्द

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों के सबब भी ईमान बरबाद हो सकता है। लिहाज़ा गुनाहों से बचते रहना चाहिये, ईमान की ह़िफ़ाज़त की दुआ़ से ग़फ़्लत नहीं करनी चाहिये, जामेए़ शराइत़ पीर से बैअ़त कर के उस की मुस्तक़िल दुआ़ओं की पनाह में आ जाना चाहिये। नीज़ ईमान की ह़िफ़ाज़त के अवराद भी करते रहना चाहिये। **"श-ज-रए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या"** सफ़ह़ा 22 पर एक विर्द लिखा है : जो **रोज़ाना सुब्ह़** (या'नी आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमक्ने तक के दरमियान किसी भी वक़्त) **41** बार يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ (अव्वल आख़िर तीन बार दुरूद शरीफ़) पढ़ लिया करेगा, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का दिल ज़िन्दा रहेगा और ईमान पर ख़ातिमा होगा।

मुसल्मां है अ़त्तार तेरे करम से   हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

नींद उड़ा दी

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब रात को लैटते तो इस त़रह़ लोट पोट होते जिस त़रह़ गर्म कड़ाही में दाने इधर उधर उछलते हैं ! फिर बिस्तर को लपेट देते और क़िब्ला रुख़ हो जाते (या'नी नवाफ़िल पढ़ते) और फ़रमाते जहन्नम के ज़िक्र ने ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ वालों की नींद उड़ा दी। सुब्ह़ तक इसी त़रह़ इबादत में मश्ग़ूल रहते।

(اِحْیَاءُ الْعُلُوْم ج٤ ص٢٣١)

दीवाना

ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى वाइ़ज़ के पास तशरीफ़ लाते और उस के वा'ज़ से रोते, जब जहन्नम का तज़्किरा होता तो चीख़ें मारते हुए उठ कर चल पड़ते, लोग पागल पागल कहते हुए आप के पीछे लग जाते। **(ایضاً)**

पुल सिरात़

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : मोमिन का ख़ौफ़ उस वक़्त तक ख़त्म नहीं होता जब तक वोह जहन्नम के ऊपर बने हुए पुल सिरात़ को उ़बूर न कर ले। **(ایضاً)**

ख़्वाब में क-रमे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ रिसाला **''बुरे ख़ातिमे के अस्बाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कर के पढ़िये, अगर आप का दिल ज़िन्दा हुवा तो पढ़ते हुए اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ रो पड़ेंगे। एक इस्लामी भाई ने ग़ालिबन 1419 सि.हि. का अपना वाक़िआ़ तह़रीर किया : मैं ने रात के वक़्त रिसाला ''बुरे ख़ातिमे के अस्बाब'' पढ़ा तो बरबादिये ईमान के ख़ौफ़ से एक दम घबरा गया, आंखों से आंसू जारी हो गए, रोते रोते सो गया, सोया तो क्या, सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, **बे कसों के यावर,** मदीने के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ लाए, मैं ने रो रो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे ईमान को बचा लीजिये ! ह़ुज़ूरे पुरनूर

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूरानी हाथों में एक रजिस्टर था जो मुझ गुनाहगार को अ़ता किया और मुस्कुरा कर फ़रमाया : **ईमान पर ख़ातिमा भी मिलेगा और सब कुछ मिलेगा ।**

सरे बालीं इन्हें रह़मत की अदा लाई है
ह़ाल बिगड़ा है तो बीमार की बन आई है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात के लिये

जो हर रात **सू-रतुल मुल्क** पढ़ेगा, वोह अ़ज़ाबे **क़ब्र** से बचा रहेगा । (مُلَخَّصاً مِنْ شَرحِ الصُّدُور ص١٤٩)

क़ब्र की रोशनी के लिये

''**रौज़ुर्रियाह़ीन**'' में है : ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम ने पांच चीज़ों को पांच में पाया ﴿1﴾ गुनाहों के इ़लाज को नमाज़े चाश्त में ﴿2﴾ क़ब्रों की रोशनी को तहज्जुद में ﴿3﴾ मुन्कर नकीर के जवाबात को तिलावते क़ुरआन में ﴿4﴾ पुल सिरात़ पर से सलामत गुज़रने को रोज़ा और स-दक़ा व ख़ैरात में ﴿5﴾ ह़श्र में सायए अ़र्श पाने को गोशा नशीनी में ।

(مُلَخَّصاً مِنْ شَرحِ الصُّدُور ص١٤٦)

क़ब्र के मददगार

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है तो उस के नेक आ'माल आ कर उसे घेर लेते

हैं। अगर अ़ज़ाब उस के सर की त़रफ़ से आए तो **तिलावते क़ुरआन** उसे रोक लेती है और अगर पाउं की त़रफ़ से आए तो **नमाज़** में क़ियाम करना आड़े आ जाता है, अगर हाथों की त़रफ़ से आए तो हाथ कहते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह हमें **स-दक़ा** देने और **दुआ** के लिये फैलाता था तुम इस तक नहीं पहुंच सकते, अगर मुंह की त़रफ़ से आए तो **ज़िक्र** और **रोज़ा** सामने आ जाते हैं इसी त़रह़ एक त़रफ़ **नमाज़** और **सब्र** खड़े होते हैं और कहते हैं, अगर कुछ कसर बाक़ी रहे तो हम मौजूद हैं। (اِحیاءُ الْعُلُوْم ج۵ص۲۵۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان व औलियाए उ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की मह़ब्बत व निस्बत भी अ़ज़ाबे क़ब्र से बचा लेती है चुनान्चे **शर्हुस्सुदूर** की दो ह़िकायात मुला-ह़ज़ा हों :

﴿1﴾ शैख़ैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के दीवाने की नजात

एक शख़्स को इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा गया : مَافَعَلَ اللهُ بِکَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी। पूछा : मुन्कर नकीर के साथ कैसी गुज़री ? जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से मैं ने उन से अ़र्ज़ की : ह़ज़राते **अबू बक्र व उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के वसीले से मुझे छोड़ दीजिये। तो उन में से एक ने दूसरे से कहा : इस ने बहुत ही बुज़ुर्ग हस्तियों का

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

वसीला पेश किया है लिहाज़ा इस को छोड़ दो । चुनान्चे वोह मुझे छोड़ कर तशरीफ़ ले गए । (مُلَخَّصاً مِنْ شَرْحِ الصُّدُورص۱٤۱)

﴾2﴿ औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के दीवाने की नजात

एक नेक शख़्स जो ह़ज़रते सय्यिदुना **बा यज़ीद बिस्त़ामी** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ख़ादिम थे । उन की वफ़ात हो गई, तदफ़ीन के बा'द क़ब्र शरीफ़ के पास मौजूद बा'ज़ अफ़राद ने सुना वोह मुन्कर नकीर से कह रहे थे : ''मुझ से क्यूं सुवालात करते हो मैं तो **बा यज़ीद बिस्त़ामी** के ख़ादिमों में से हूं ।'' चुनान्चे मुन्कर नकीर उन्हें छोड़ कर तशरीफ़ ले गए । (ایضاً ص۱٤۲)

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर माह अपने यहां के ज़ैली निगरान को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से ईमान की ह़िफ़ाज़त और सुन्नतों पर अ़मल का ज़ेह्न बनेगा नीज़ अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात का सामान होगा ।

दो इ़ब्रत नाक ह़िकायात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल बात बात पर लोग रिश्तेदारियां काट कर रख देते हैं, लिहाज़ा आपस में मह़ब्बत की फ़ज़ा क़ाइम होने की ख़्वाहिश की अच्छी निय्यत के साथ मज़ीद सवाब कमाने के लिये रिश्तेदारों के साथ ह़ुस्ने सुलूक के ज़िम्न में 2 ह़िकायात मुला-ह़ज़ा हों :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

《1》 **हिकायत :** हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ एक मर्तबा **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अहादीसे मुबा-रका बयान फ़रमा रहे थे, इस दौरान फ़रमाया : हर क़ातेए रेह़्म (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने वाला) हमारी महफ़िल से उठ जाए। एक नौ जवान उठ कर अपनी फूफी के हां गया जिस से उस का कई साल पुराना झगड़ा था, जब दोनों एक दूसरे से राज़ी हो गए तो उस नौ जवान से फूफी ने कहा : तुम जा कर इस का सबब पूछो, आख़िर ऐसा क्यूं हुवा ? (या'नी सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ए'लान की क्या हिक्मत है ?) नौ जवान ने हाज़िर हो कर जब पूछा तो हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि मैं ने **हुज़ूरे अन्वर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह सुना है : "जिस क़ौम में क़ातेए रेह़्म (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने वाला) हो, उस (क़ौम) पर **अल्लाह** की रह़मत का नुज़ूल नहीं होता।" **(اَلزَّواجِرُ عَنِ اقۡتِرافِ الۡکَبائِر ج۲ ص۱۵۳)**

《2》 **हिकायत :** एक हाजी ने किसी दियानत दार शख़्स के पास **मक्कए मुकर्रमा** में एक हज़ार दीनार बतौरे अमानत रखवाए। **मनासिके हज** की अदाएगी के बा'द **मक्कए मुकर्रमा** वापसी पर मा'लूम हुवा कि वोह शख़्स फ़ौत हो चुका है। मर्हूम के घर वालों से अमानत की मा'लूमात की तो उन्हों ने ला इल्मी का इज़्हार किया, एक **वलिय्युल्लाह** رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने हाजी से फ़रमाया : आधी रात के वक़्त **बीरे ज़मज़म** के क़रीब उस शख़्स का नाम ले कर पुकारो, अगर जन्नती हुवा तो اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जवाब देगा। चुनान्चे वोह गया और ज़मज़म शरीफ़ के कूंएं में आवाज़ दी मगर

जवाब न मिला, उस ने जब उस बुज़ुर्ग को बताया तो उन्हों ने ''اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ कर फ़रमाया : डर है कि वोह शख़्स **जहन्नमी** हो, मुल्के यमन जाओ, वहां **बरहूत** नाम का एक कूंआं है, आधी रात के वक़्त उस में झांक कर, उस आदमी का नाम ले कर पुकारो, अगर जहन्नमी हुवा तो जवाब देगा। चुनान्चे उस ने ऐसा ही किया, उस ने जवाब दिया। तो पूछा : मेरी अमानत कहां है ? उस ने कहा : मैं ने अपने घर के अन्दर फ़ुलां जगह दफ़्न की है जा कर खोद कर हासिल कर लो। पूछा : तुम तो नेकी में मश्हूर थे फिर येह सज़ा कैसी ? उस ने कहा : मेरी एक ग़रीब बहन थी मैं ने उस को छोड़ दिया था, उस पर शफ़्क़त नहीं करता था। **अल्लाह तआ़ला** ने बहन से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी करने की मुझे येह सज़ा दी है। **(کتاب الکبائر ص۵۳، ۵٤)**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेटा बेटी, वालिदैन, नाना नानी, दादा दादी, भाई बहन, ख़ाला मामूं, चचा फूफी वग़ैरा रिश्तेदार **ज़ुल अरहाम** कहलाते हैं, इन के साथ बिला इजाज़ते शर-ई तअ़ल्लुक़ात तोड़ डालना क़त्ए़ रेहमी कहलाता है। क़त्ए़ रेहमी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : (रिश्तेदारों से) **क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।**

(بُخاری شریف ج٤ص٩٧حدیث٥٩٨٤) (हां बद अ़क़ीदा रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात न रखे जाएं)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

दस फ़िक्र अंगेज़ फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ तुम सब **निगरान** हो और तुम में से हर एक से उस के मा तह़्त अफ़राद के बारे में पूछा जाएगा। (اَلْمُعْجَمُ الصَّغِير لِلطَّبَرانی ج۱ص۱۶۱)

﴾2﴿ जो **निगरान** अपने मा तह़्तों से ख़ियानत करे वोह जहन्नम में जाएगा। (مسند امام احمد بن حنبل ج۷ص۲۸۴حدیث۲۰۳۱۱)

﴾3﴿ जिस शख़्स को **अल्लाह तआ़ला** ने किसी रिआ़या का **निगरान** बनाया फिर उस ने उन की ख़ैर ख़्वाही का ख़याल न रखा तो वोह जन्नत की ख़ुश्बू भी नहीं पा सकेगा। (بُخاری ج۴ص۴۵۶حدیث۷۱۵۱)

﴾4﴿ इन्साफ़ करने वाले **क़ाज़ी** पर क़ियामत के दिन एक साअ़त ऐसी आएगी वोह तमन्ना करेगा कि काश ! वोह दो आदमियों के दरमियान एक खजूर के बारे में भी फ़ैसला न करता। (مَجمعُ الزَّوائد ج۴ص۳۴۸حدیث۶۹۸۶)

﴾5﴿ जो शख़्स दस आदमियों पर भी **निगरान** हो क़ियामत के दिन उसे इस त़रह़ लाया जाएगा कि उस का हाथ उस की गरदन से बंधा हुवा होगा। अब या तो उस का अ़द्ल उसे छुड़ाएगा या उस का ज़ुल्म उसे अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा। (اَلسّنَنُ الكُبرٰی لِلْبَیہَقِی ج ۳ ص ۱۸۴ حدیث ۵۳۴۵)

﴾6﴿ (**दुआ़ए मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ऐ **अल्लाह** ! जो शख़्स मेरी उम्मत के किसी मुआ़-मले का **निगरान** है पस वोह उन पर सख़्ती करे तो तू भी उस पर सख़्ती फ़रमा। और उन से नरमी बरते तो तू भी उस से नरमी फ़रमा। (مُسلم ص۱۰۱۶حدیث۱۸۲۸)

﴾7﴿ **अल्लाह तआ़ला** जिस को मुसल्मानों के उमूर में से किसी मुआ़-मले का **निगरान** बनाए पस अगर वोह उन की ह़ाजतों, मुफ़्लिसी

और फ़क़्र के दरमियान रुकावट खड़ी कर दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस की ह़ाजत, मुफ़्लिसी और फ़क़्र के सामने रुकावट खड़ी करेगा। **(ابو داود ج ۳ ص۱۸۹حدیث۲۹۴۸)** (आह ! आह ! आह ! जो मा तह़ूतों की ह़ाजतों को इरा-दतन पूरा नहीं करता **अल्लाह तआ़ला** भी उस की ह़ाजतें पूरी नहीं करेगा)

《8》 **अल्लाह तआ़ला** उस पर रह़्म नहीं करता जो लोगों पर रह़्म नहीं करता। **(بُخاری ج ٤ ص ٥٣٢ حدیث ٧٣٧٦)**

《9》 "बेशक तुम अ़न्क़रीब हुक्मरानी की ख़्वाहिश करोगे लेकिन क़ियामत के दिन वोह पशेमानी का बाइ़स होगी।" दूसरी रिवायत में है : "मैं इस अम्र (या'नी हुक्मरानी) पर किसी ऐसे शख़्स को मुक़र्रर नहीं करता जो इस का सुवाल करे या इस की ह़िर्स रखता हो।" **(بُخاری ج ٤ص٤٥٦حدیث٧١٤٨، ٧١٤٩)** (जो वज़ारत, ओ़हदा और निगरानी वग़ैरा के लिये भागदौड़ करता और ओ़हदे से मा'ज़ूली की सूरत में फ़साद करता है उस के लिये इ़ब्रत ही इ़ब्रत है)

《10》 **इन्साफ़ करने वाले नूर के मिम्बरों पर होंगे** येह वोह लोग हैं जो अपने फ़ैसलों, घर वालों और जिन के **निगरान** बनते हैं उन के बारे में अ़द्ल से काम लेते हैं। **(سُنَنِ نَسائی ص۸۵۱حدیث۵۳۸۹)**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **महृब्बत** की उस ने मुझ से **महृब्बत** की और जिस ने मुझ से **महृब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। **(اِبنِ عَساکِر ج۹ص۳۴۳)**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

"जनाज़ा बाइसे इब्रत है" के 15 हुरूफ़ की निस्बत से जनाज़े के 15 म-दनी फूल

۞ **4 फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** (1) जिसे किसी **जनाज़े** की ख़बर मिले वोह अहले मय्यित के पास जा कर उन की ता'ज़ियत करे **अल्लाह तआला** उस के लिये एक क़ीरात़ सवाब लिखे, फिर अगर **जनाज़े** के साथ जाए तो **अल्लाह तआला** दो क़ीरात़ अज्र लिखे, फिर उस पर नमाज़ पढ़े तो तीन क़ीरात़, फिर दफ़्न में ह़ाज़िर हो तो चार और हर क़ीरात़ कोहे उहुद (या'नी उहुद पहाड़) के बराबर है (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 401, **عمدۃُ القاری ج۱ص ۴۰۰ تحتَ الحدیث۴۷**) (2) मुसल्मान के मुसल्मान पर छ6 हुक़ूक़ हैं, (उन में से एक येह है कि) जब फ़ौत हो जाए तो उस के जनाज़े में शरीक हो **(مُسلم حدیث ۵(۲۱۶۲) ص ۱۱۹۲ مُلَخَّصاً)** (3) जब कोई **जन्नती शख़्स** फ़ौत हो जाता है, तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ह़या फ़रमाता है कि उन लोगों को अ़ज़ाब दे जो इस का जनाज़ा ले कर चले और इस के पीछे चले और जिन्हों ने इस की **नमाज़े जनाज़ा** अदा की **(اَلْفِردَوس بمأثور الْخطّاب ج۱ص۲۸۲ حدیث۱۱۰۸)** (4) बन्दए मोमिन को मरने के बा'द सब से पहली जज़ा येह दी जाएगी कि उस के तमाम **शु-रकाए जनाज़ा की बख़्शिश** कर दी जाएगी

(مُسنَدُ البزار ج ١١ ص ٨٦ حديث ٤٧٩٦) ۞ **हज़रते** सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जिस ने महूज़ तेरी रिज़ा के लिये **जनाज़े** का साथ दिया, उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह तआ़ला** ने फ़रमाया : जिस दिन वोह मरेगा, फ़िरिश्ते उस के **जनाज़े** के हमराह चलेंगे और मैं उस की **मग़्फ़िरत** करूंगा (شَرْحُ الصُّدُور ص ٩٧) ۞ **हज़रते** सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا को बा'दे वफ़ात किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या सुलूक फ़रमाया ? कहा : एक कलिमे की वज्ह से बख़्श दिया जो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ जनाज़ा देख कर कहा करते थे। (वोह कलिमा येह है :) سُبْحٰنَ الْحَيِّ الَّذِیْ لَا يَمُوْت (या'नी वोह ज़ात पाक है जो ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं आएगी) लिहाज़ा मैं भी **जनाज़ा** देख कर येही कहा करता था, येह कलिमा (कहने) के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे **बख़्श** दिया (اِحیاءُ الْعُلوم ج٥ص٢٦٦ مُلَخَّصاً) ۞ जनाज़े में रिज़ाए इलाही, फ़र्ज़ की अदाएगी, मय्यित और उस के अ़ज़ीज़ों की दिलजूई वग़ैरा अच्छी अच्छी निय्यतों से शिर्कत करनी चाहिये ۞ **जनाज़े** के साथ जाते हुए अपने अन्जाम के बारे में सोचते रहिये कि जिस त़रह़ आज इसे ले चले हैं, इसी त़रह़ एक दिन मुझे भी ले जाया जाएगा, जिस त़रह़ इसे मनों मिट्टी तले दफ़्न किया जाने वाला है, इसी त़रह़ मेरी भी तदफ़ीन अ़मल में लाई जाएगी। इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करना इबादत और कारे

सवाब है ۞ **जनाज़े** को कन्धा देना कारे सवाब है, सय्यिदुल मुर-सलीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का **जनाज़ा** उठाया था **(الطبقاتُ الكُبرٰی لابن سعد ج٣ص٣٢٩ ،اَلْبِنايه ج٣ ص٥١٧ مُلَخَّصاً)** ۞ **ह़दीसे** पाक में है : "जो जनाज़ा ले कर चालीस क़दम चले उस के **चालीस कबीरा गुनाह** मिटा दिये जाएंगे।" नीज़ ह़दीस शरीफ़ में है : "जो **जनाज़े** के चारों पायों को कन्धा दे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस की ह़त्मी (या'नी मुस्तक़िल) मग़्फ़िरत फ़रमा देगा" (**جوهره ص١٣٩ ، دُرِّمُختار ج٣ص١٥٨-١٥٩**, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 823) ۞ सुन्नत येह है कि यके बा'द दीगरे चारों पायों को कन्धा दे और हर बार दस दस क़दम चले। पूरी सुन्नत येह है कि पहले सीधे सिरहाने कन्धा दे फिर सीधी पाइंती (या'नी सीधे पाउं की त़रफ़) फिर उलटे सिरहाने फिर उलटी पाइंती और दस दस क़दम चले तो कुल चालीस क़दम हुए। (**عالمگیری ج١ص١٦٢**, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 822) बा'ज़ लोग जनाज़े के जुलूस में ए'लान करते रहते हैं : दो दो क़दम चलो ! उन को चाहिये कि इस त़रह़ ए'लान किया करें : "**दस दस क़दम चलो**" ۞ **जनाज़े** को कन्धा देते वक़्त जानबूझ कर ईज़ा देने वाले अन्दाज़ में लोगों को धक्के देना जैसा कि बा'ज़ लोग किसी शख़्सिय्यत के जनाज़े में करते हैं येह ना जाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ۞ **छोटे** बच्चे का जनाज़ा अगर एक शख़्स हाथ पर उठा कर ले चले तो ह़रज नहीं और यके बा'द दीगरे लोग हाथों में लेते रहें

(عالمگیری ج۱ص۱۶۲) औ़रतों को (बच्चा हो या बड़ा किसी के भी) जनाज़े के साथ जाना **ना जाइज़** व मम्नूअ़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 823, دُرِّمُختار ج۳ص۱۶۲) ۞ **शोहर** अपनी बीवी के **जनाज़े** को कन्धा भी दे सकता है, **क़ब्र** में भी उतार सकता है और मुंह भी देख सकता है। सिर्फ़ ग़ुस्ल देने और बिला ह़ाइल बदन को छूने की मुमा-न-अ़त है (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 812, 813) ۞ **जनाज़े** के साथ बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा या कलिमए शहादत या ह़म्दो ना'त वग़ैरा पढ़ना जाइज़ है। (देखिये **:** फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 9 सफ़ह़ा 139 ता 158)

जनाज़ा आगे आगे कह रहा है ऐ जहां वालो !
मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

एक चुप सो[100] सुख

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे हि़साब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

14 र-जबुल मुरज्जब 1435 सि.हि.

14-05-2014

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

مآخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	ابن عساکر	دارالفکر بیروت
بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	عمدۃ القاری	دارالفکر بیروت
مسلم	دارابن حزم بیروت	مرقاۃ المفاتیح	دارالفکر بیروت
ابوداود	داراحیاء التراث العربی بیروت	الزّواجر عن اقتراف الکبائر	دارالمعرفۃ بیروت
ترمذی	دارالفکر بیروت	احیاء العلوم	دارصادر بیروت
نسائی	دارالکتب العلمیۃ بیروت	شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضا الہند
ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت	اھوال القبور	دارالغد الجدید مصر
مسند امام احمد	دارالفکر بیروت	اتحاف السّادۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
معجم صغیر	دارالکتب العلمیۃ بیروت	کتاب الکبائر	پشاور
مسند ابویعلی	دارالکتب العلمیۃ بیروت	درّ مختار	دارالمعرفۃ بیروت
مسند بزار	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ	جوہرہ	باب المدینہ کراچی
سنن کبرٰی	دارالکتب العلمیۃ بیروت	عالمگیری	دارالفکر بیروت
الفردوس بمأثور الخطّاب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
مجمع الزوائد	دارالفکر بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
طبقات کبرٰی	دارالکتب العلمیۃ بیروت	تذکرۂ مشائخ قادریہ رضویہ	کشمیر انٹرنیشنل پبلشرز مرکز الاولیاء لاہور
حلیۃ الاولیاء	دارالکتب العلمیۃ بیروت	شجرۂ قادریہ رضویہ عطّاریہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़	उ़न्वान	सफ़ह़
फोड़े का ऑपरेशन	1	अहले क़ुबूर की सोह़बत	17
क़ब्र पर मिट्टी डालने वाले की मग़्फ़िरत हो गई	2	मैं भी इन्हीं में से हूं	17
क़ब्र पर मिट्टी डालने का त़रीक़ा	3	कीड़े रींग रहे हैं	18
क़ब्र की ह़ाज़िरी पर गिर्या व ज़ारी	3	नर्म नर्म बिस्तर और क़ब्र	18
ख़ौफ़े उ़स्मानी	4	बैल की त़रह़ चीख़ते	19
काश ! मेरी मां ही मुझे न जनती	4	क़ब्र में डराने वाली चीज़ें	19
दुन्यवी चीज़ों का सदमा	5	गुनाहों की ख़ौफ़नाक शक्लें	20
मोमिन की क़ब्र 70 हाथ कुशादा की जाती है	6	अगर ईमान बरबाद हो गया !	21
क़ाबिले रश्क कौन ?	7	अन्धा बहरा चौपाया	21
क्या ह़ाल होगा !	7	काश ! वोह शख़्स मैं होता	22
मय्यित की अ़क़्ल सलामत रहती है	8	सहमे सहमे रहने वाले बुज़ुर्ग	22
तश्वीश..... तश्वीश..... तश्वीश	8	रब عَزَّوَجَلَّ राज़ी हो गया !	23
गुनाह से बचने का एक नुस्ख़ा	10	ख़ुश फ़हमी में मत रहिये	23
क़ब्र की डांट	11	ईमान पर ख़ातिमे का विर्द	25
भाग नहीं सकते	11	नींद उड़ा दी	25
फ़रमां बरदार पर रह़मत	12	दीवाना	26
सब से होलनाक मन्ज़र	12	पुल सिरात़	26
मह़बूबे बारी की अश्कबारी	12	ख़्वाब में क-रमे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	26
क़ब्र का पेट	13	अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात के लिये	27
हाए मौत	13	क़ब्र की रोशनी के लिये	27
दफ़्नाने वालों को मुर्दा देखता है	14	क़ब्र के मददगार	27
बे कसी का दिन	14	शैख़ैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के दीवाने की नजात	28
पड़ोसी मुर्दों की पुकार	14	औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के दीवाने की नजात	29
मेरे बाल बच्चे कहां हैं !	15	दो इ़ब्रत नाक ह़िकायात	29
जन्नत का बाग़ या जहन्नम का गढ़ा !	16	दस फ़िक्र अंगेज़ फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	32
बे शुमार लोग मग़्मूम हैं	16	जनाज़े के 15 म-दनी फूल	34
आ़रिज़ी क़ब्र	17	मआख़िज़ो मराजेअ़	38

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

ग़ैर मोह़तात़ ज़बान वाले की क़ियामत में पांच जगह परेशानी

मन्क़ूल है कि हर हंसी मिज़ाह़ (या'नी मज़ाक़) या लग़्व बात (या'नी फ़ुज़ूल बात) पर बन्दे को (मैदाने क़ियामत में) पांच मक़ामात पर झिड़कने और वज़ाह़त त़लब करने की ख़ात़िर रोका जाएगा :

﴿1﴾ तू ने बात क्यूं की थी ? क्या इस में तेरा कोई फ़ाएदा था ?

﴿2﴾ तू ने जो बात की थी क्या उस से तुझे कोई नफ़्अ़ ह़ासिल हुवा ?

﴿3﴾ अगर तू वोह बात न करता तो क्या तुझे कोई नुक़्सान उठाना पड़ता ?

﴿4﴾ तू ख़ामोश क्यूं न रहा ताकि अन्जाम से मह़फ़ूज़ रहता ?

﴿5﴾ तू ने इस की जगह سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ कह कर अज्रो सवाब क्यूं ह़ासिल न किया ?

(क़ूतुल क़ुलूब, जिल्द अव्वल, स. 468, मक-त-बतुल मदीना)

MC 1266

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net